# CHAPTER 14: काव्य-बादल को घिरते देखा है [नागार्जुन]

## PAGE 166, अभ्यास

### 11:17:1: प्रश्न-अभ्यास:1

**1. इस कविता में बादलों के सौंदर्य चित्रण के अतिरिक्त और किन दृश्यों का चित्रण किया गया है?**

**उत्तर-** इस कविता में निम्नलिखित दृश्यों का चित्रण है :

(क) ओस की बूंदों को कमलों पर गिरने के दृश्य का चित्रण ।

(ख) हिमालय में विद्यमान झीलों पर हंसो के तैरने का दृश्य ।

(ग) वसंत ऋतू के सुन्दर सुबह के दृश्य का चित्रण ।

(घ) चकवा-चकवी का सुबह मिलने के दृश्य का चित्रण ।

(ङ) कस्तूरी हिरण के भगाने के दृश्य का चित्रण ।

(च) किन्नर तथा किन्नरियों के दृश्य का चित्रण ।

### 11:17:1: प्रश्न-अभ्यास:2

**2. प्रणय-कलह से कवि का क्या तात्पर्य है?**

**उत्तर-** प्रणय-कलह कवि का तात्पर्य प्रेम रूपी झगडे से है। इस झगड़े में कड़वाहाट की जगह प्रेम शामिल है। यह दो प्यार करने वाले जोड़ों के बीच प्यार की लड़ाई है। कविता चकवा और चकवी के बीच इस प्रेम-विवाद को दर्शाती है।

**11:17:1: प्रश्न-अभ्यास:3**

**3. कस्तूरी मृग के अपने पर ही चिढ़ने के क्या कारण हैं?**

**उत्तर-** कस्तूरी मृग अपने पूरे जीवन में कस्तूरी गंध के खोज में रहता है। उसे इस तथ्य का ज्ञान नहीं है कि कस्तूरी उसकी नाभि में है। जब वह खोजते-खोजते थक जाता है, तो चिढ़ जाता है। वह अपनी असमर्थता के कारण परेशान हो जाता है।

**11:17:1: प्रश्न-अभ्यास:4**

**4. बादलों का वर्णन करते हुए कवि को कालिदास की याद क्यों आती है?**

**उत्तर-** कालिदास एक कवि हैं जिन्होंने बादल को अपने काम 'मेघदूत' में एक दूत के रूप में चित्रित किया। धनपति कुबेर द्वारा एक यक्ष को भगा दिया गया था। उसने यक्ष ने मेघ को दूत बनाकर अपने प्रिय को संदेश भेजा। कालिदास ने जिन स्थानों का उल्लेख किया था, उन्हें खोजने के लिए कवि

ने बहुत प्रयास किया। परन्तु कवि उन स्थानों को पा नहीं सका। इस लिए कवि जब भी बादलों का वर्णन करता है उसे कालिदास की याद आ जाती है।

**11:17:1: प्रश्न-अभ्यास:5**

**5. कवि ने 'महामेघ को इंझानिल से गरज-गरज भिड़ते देखा है' क्यों कहा है?**

**उत्तर-** पर्वतीय क्षेत्रों में कैलाश के शिखर पर, कवि ने बादलों के एक समूह को तूफानों से लड़ते देखा है। अक्सर बादलों का समूह तेज हवाओं के साथ टकराते हैं। जिसके कारण आसमान में भयंकर गर्जना होने लगती  है। यह दिखाता है की वे लड़ते हैं। इसीलिए कवि ने कहा है महामेघ को झंझानिल से गरज गरज भिड़ते देखा है।

**11:17:1: प्रश्न-अभ्यास:6**

**6. 'बादल को घिरते देखा है' पंक्ति को बार-बार दोहराए जाने से कविता में क्या सौंदर्य आया है? अपने शब्दों में लिखिए।**

**उत्तर-** इस पंक्ति का उपयोग कवि ने टेक के रूप में किया है। इसलिए इसका उपयोग हर अन्तरा के बाद किया जाता है। इस तरह कविता प्रभावी हो जाती है और उसका मूलभाव

स्पष्ट हो जाता है। इसके प्रयोग से काव्य सौंदर्य में भी आश्चर्यजनक वृद्धि होती है।

**7. निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए-**
**(क) निशा काल से चिर-अभिशापित/बेबस उस चकवा-चकई का**
**बंद हुआ क्रंदन, फिर उनमें/उस महान सरवर के तीरे**
**शैवालों की हरी दरी पर/प्रणय-कलह छिड़ते देखा है।**

**(ख) अलग नाभि से उठने वाले/निज के ही उन्मादक परिमल-**
**के पीछे धावित हो-होकर/तरल तरुण कस्तूरी मृग को**
**अपने पर चिढ़ते देखा है।**

**उत्तर**
(क) प्रस्तुत पंक्ति में चकवा और चकई का दर्द दर्शाया गया है। कहा जाता है कि चकवा और चकवी को श्राप है कि वे रात को अलग हो जाएँगे। यहाँ पर उसी श्राप का उल्लेख करते हुए कवि कहता है कि अभिशापित चकवा और चकई रात को अलग हो जाते हैं। वे दोनों एक-दूसरे के लिए पूरी रात रोते हैं। सुबह होने पर उनका क्रंदन (रोना) बंद हो जाता है। वे दोबारा से तालाब के किनारे में व्याप्त हरी शैवालों पर प्रेम की मीठी लड़ाई लड़ने लगते हैं। मानो चकई बोल रही हो कि तुम रात मुझे छोड़कर क्यों चले गए थे। यह प्रणय-कलह कवि स्वयं देखता है।

(ख) प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कस्तूरी हिरण की परेशानी को दर्शाता है। वह कहता है कि कस्तूरी मृग पूरा जीवन कस्तूरी गंध के पीछे भागता रहता है। उसे इस सत्य का भान ही नहीं होता है कि वह गंध तो उसकी नाभि में व्याप्त कस्तूरी से आती है। जब वह ढूँढ़-ढूँढ़कर थक जाता है, तो उसे अपने पर ही चिढ़ हो जाती है। वह अपनी असमर्थता के कारण परेशान हो उठता है।

**8. संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए-**
**(क) छोटे-छोटे मोती जैसे ..... कमलों पर गिरते देखा है।**
**(ख) समतल देशों में आ-आकर ..... हंसों को तिरते देखा है।**
**(ग) ऋतु वसंत का सुप्रभात था ..... अगल-बगल स्वर्णिम शिखर थे।**
**(घ) ढूँढ़ा बहुत परंतु लगा क्या ..... जाने दो, वह कवि-कल्पित था।**

**उत्तर**
(क) संदर्भ- प्रस्तुत पंक्ति 'नागर्जुन' द्वारा रचित कविता 'बादल को घिरते देखा है' से ली गई हैं। इसमें कवि वर्षा ऋतु में तालाब के सौंदर्य का वर्णन कर रहा है।
व्याख्या- कवि कहता है कि वर्षा का सौंदर्य अद्‌भुत है। हिमालय स्थल में तो इस सौंदर्य की बात ही अलग है। ओस के छोटे-छोटे कण मोती के समान लग रहे हैं। उसके शीतल और बर्फ के समान कणों को कवि ने मानसरोवर में सुनहरे खिले कमलों के ऊपर गिरते देखा है। भाव यह है कि ओस के कणों को उसने कमल पर गिरते देखा है। यह सौंदर्य अद्‌भुत था।

(ख) संदर्भ- प्रस्तुत पंक्ति 'नागर्जुन' द्वारा रचित' कविता 'बादल को घिरते देखा है' से ली गई हैं। इसमें कवि वर्षा ऋतु में हिमालय स्थल में बनी झीलों के सौंदर्य का वर्णन कर रहा है।
व्याख्या- कवि कहता है कि हिमालय पर्वत श्रृंखला में बहुत-सी छोटी-बड़ी प्राकृतिक झीलें विद्यमान हैं। इन झीलों में मैदानी स्थानों के ऊमस भरे मौसम से तंग आकर हंसों के समूह को आते देखा है। वे झीलों के नीले जल में तीखे-मीठे स्वाद से युक्त वाले कमल नालों को खोजते हुए तैरते हैं। वे इस झील में बहुत सुंदर लगते हैं। भाव यह है कि वर्षा ऋतु में हिमालय की झीलें इन हंसों का निवास स्थान बन जाती है।

(ग) संदर्भ- प्रस्तुत पंक्ति 'नागर्जुन' द्वारा रचित कविता 'बादल को घिरते देखा है' से ली गई हैं। इसमें कवि वसंत ऋतु की सुबह के सौंदर्य का वर्णन कर रहा है।
व्याख्या- कवि कहता है कि वसंत ऋतु का सुंदर प्रभात (सुबह) हो रहा है। इस समय मंद तथा शीतल हवा चल रही है। सूर्यास्त की सुनहरी किरणें अपने आस-पास व्याप्त शिखरों को सोने के समान रंग में रंग रही हैं। भाव यह है कि वसंत

ऋतु की सुबह का सौंदर्य बहुत सुंदर होता है।

(घ) संदर्भ- प्रस्तुत पंक्ति 'नागर्जुन' द्वारा रचित कविता 'बादल को घिरते देखा है' से ली गई हैं। इसमें कवि कालिदास द्वारा मेघदूत में वर्णित स्थानों को ढूँढ़ रहा है।
व्याख्या- कवि कहता है कि कालिदास ने मेघदूत रचना में व्याप्त अलकापुरी का उल्लेख किया है। उसने उसे ढूँढ़ने का बहुत प्रयास किया लेकिन उसे नहीं मिली। कवि कहता है कि वह कौन-सा स्थान होगा, जहाँ मेघ रूपी दूत बरस पड़ा होगा। कवि कहता है कि मैंने बहुत ढूँढ़ा पर असफलता हाथ लगी है। अतः इसे जाने देते हैं शायद यह कवि की कल्पना मात्र थी।